# गुरु कृपा का दर्शन

मेरै हीअरै रतन नाम हर बसिआ गुर हाथ धरिओ मेरै माथा ॥
जनम जनम के किलबिख दुख उतरे गुर नाम दीओ रिन लाथा॥
( जैतसरी महला ४ घरु १ चउपदे अंग ६९६।")

गुरुबाणीकी इन पंक्तियोंका अर्थ है, जब पूज्यश्रीसदगुरुने मेरे माथे पर अपना आशीर्वाद भरा हाथ रखा तो मेरे हृदयमें हरि-नाम रूपी रत्न बस गया। मेरे जन्म-जन्मांतरोंके किल्विष दुःख दूर हो गए हैं, क्योंकि पूज्यश्रीसदगुरुने मुझे परमात्माका नाम प्रदान किया है और मेरा ऋण उतर गया है॥

मैंने कथा कहानियोंमें खूब सुना था कि सद्गुरू भगवानके हाथमें मनुष्यका हाथ दे देते हैं।

खूब सुना था संत चाहें तो ईश्वर तुरंत कृपा करते हैं।

खूब सुना था जब आर्त भावसे पुकारो तो प्रभु भागे चले आते हैं।

यह भी सुना था जीवनमें दुःख केवल आपको सजा देनेके लिए नहीं आते परमात्मासे मिलानेके लिए भी आते हैं।

यह तो पूज्य गुरुदेवने बार बार बताया था के भगवानका केवल नाम सब दुःख दूर कर सकता है।नाममें अपार शक्ति है।

यह भी सुना था ठाकुर का नामलेने से प्रारब्ध भोगना भी पड़े तो ठाकुर संग मुश्किल समय कटवाते हैं।

इन बातोंपे विश्वास करना शुरू किया नाम जप शुरू किया लेकिन कहीं मनके कोने में यह भी था भगवान आए थे क्योंकि वह द्रौपदीथी जिसने आर्त भावसे पुकारा था। वह उत्तरा थी जिसके कहने पर परीक्षित की रक्षाकी थी, वह सब धर्मात्मा थे, मैं तो महां पापी हूँ मेरे लिए तो पता नहीं आएँगे या नहीं।

मुझे goitre था। जोकि लगपग २०१४ में पता चला था । सबसे पहले अल्लोपथिक ट्रीटमेंट किया, फिर आयुर्वैदिक इलाज हुया। फिर तीन वर्ष होमीओपैथिक इलाज भी किया। गलेमें सिस्ट १२ अगस्त २०२२ को १० सेंटीमीटर साइज़का एवं वजन में ३५० ग्रामका था। होमीओपैथिक इलाज करते करते पूज्य श्रीसद्गुरुदेवसे मार्च २०२० में नाम मंत्र लिया। मैं मल्टीनैशनल कम्पनीमें सिनीयर मैनेजरकेके तौरपे काम करती हूँ।

मैंने लगातार अभी तक व्यस्त दिनचर्या होने पर भी तन्मयतासे जप किया। दिनमें सात-सात घंटे भी जप किया। पूज्य गुरुदेव कहते थे आर्त भावसे भगवानसे माँगो सब ठीक होगा।
नाम जपमें खूब आनंद आने लगा।रोज़ नियत संख्याका नाम जप करती थी लेकिन जब भगवानसे माँगनेकी बारी आती तो माँग नहीं पाती थी।

पूज्य गुरुदेवने एक दिन दिव्य गुरु परिवारमें नाता जोड़ दिया।
गुरुपरिवारके सदस्य तो हर रोज़ नियत संख्यामें महामंत्र जप करते थे। सबसे प्रेरित होकर मैं भी महामंत्र जप करने लगी। मैं बार बार महामंत्रकी तरफ़ खिच जाती थी। बिना माँगे वृंदावनमें पूज्य गुरुदेवकी कृपा हो गई , पूज्य गुरुदेवसे बीज मंत्र मिला। अब तो नाम मंत्र छोड़ कर महामंत्र जप करने लगी।

बीच बीचमें ऐसा लगता था मेरा सिस्ट बड़ रहा है मैं फिर नाम मंत्र करने लगी। पूज्य गुरुदेवने समझाया भी नाम मंत्र जपो यह महामंत्र ही है। मैं नाम मंत्र जपती पर आर्त भावसे माँग नहीं पाती थी। कभी माँगती भी थी क्योंकि पूज्यगुरुदेव ने कहा था।

अब सिस्ट बड़ा हो रहा था। अब निश्चय किया कि मेरे ठाकुरकी शायद यही इच्छा थी कि ऑपरेशन हो। मुझे यह विश्वास तो था नाम जप व्यर्थ नहीं जाता है।ठाकुर कृपातो ज़रूर करेंगे। मनमें ठाकुर जीसे कहा प्रभु जब ऑपरेशन होगा तो मेरे पति देवका कहीं नाम जप से विश्वास ना उठ जाए।फिर मुझे ताना भी देंगे। इसलिए लाज रखना।

ऑपरेशन १२ अगस्तको था। डॉक्टरके वाक्य बार बार सुनाई पड़ते थे। ऑपरेशन साधारण नहीं था।१० तारीख़की रात मैं सो नहीं पाई रातमें नाम जप करती रही। ११ तारीख़को office गई। लगपग १० दिनसे किसीसे बात नहीं कर रही थी। मन बहुत उदास था।

११ तारीख़की रातको मैं ११ बजे के सो गई। नींद आ गई।
लगपग मध्य रात्रिमें श्लोकोंका पाठ होने लगा। श्लोक मेरी आँखोके सामने चल रहे थे। पुराने से पन्ने थे। काले मोटे अक्षर थे। मनकी आँखोसे मैं श्लोक देख पा रही थी मनके कानोंसे उच्च स्वरमें पाठ होता हुआ सुन भी पा रही थी।ऐसे लग रहा था शायद मैं भी पाठ कर रही थी।

जब मैंने यह पंक्ति सुनी:

<u>प्रहापयँल्लोकभयं स्वनेन ग्रस्तसमस्ततेजा:</u>

मैं नींदमें चौंक जाती हूँ। नींदमें समझ आता है कि नारायण कवचका पाठ हो रहा है परंतु मुझे इतना स्पष्ट श्लोक उच्चारण नहीं आता है ना ही पूरा नारायण कवच कंठस्थ है। फिर यह कौन कर रहा है। फिर मैं श्रीराधा रमणकी सलोनी मूरतका ध्यान कर पूज्य गुरुदेव द्वारा रक्षा मंत्र जपने लगी और सो गई।

कुछ ही पलमें सिलसिला फिरसे शुरू हुआ। फिरसे नारायण कवचका उच्च स्वरमें पाठ होने लगा। जो केवल मैंने ही सुना। मैं फिर हैरान थी यह कैसे हो रहा है। फिर से मैं श्रीराधारमणकी सलोनी मूरतका ध्यान कर पूज्य गुरुदेव द्वारा रक्षा मंत्र जपने लगी।

नारायण कवचका पाठ एक दो बार नहीं । बार बार हुया।

पाठ जब समाप्त हुया तो मैंने महसूस कियाके मेरे इर्द गिर्द एक पारदर्शी घेरा बन गया है। मेरा मनोबल एकदम बहुत बड़ गया था। मैं सोती रही सुबह ५ ५० पर नींद खुली। मैं इस दिव्य दृश्यको बार याद करते हुए पूज्य गुरुदेवको नमन किया , संध्या वन्दन किया और ६ बजेसे कुछ बाद हॉस्पिटल चली गई।

डॉक्टर ने कहा था ऑपरेशन मुश्किल हो सकता है। ३ घंटे लंगेंगे। ICU ventilator , ब्लड की सब त्यारी थी। मैं अंदरसे तयार थी। ऑपरेशन टेबल पर लेटी तो आँखे बंद थी मेरी कल्पनामें मध्यमें सफ़ेद पोशाक धारी श्रीराधा रमण थे दाईं तरफ़ श्रीजीके साथ भी थे, बाईं तरफ़ भोलेनाथ मैयाके साथ थे उनके हाथोंसे प्रकाश निकल रहा था।

मनमें नाम मंत्र जप करते हुए मैं सो गई।

जब उठी तो मुझे ICU में नहीं रखा गया। वेंटिलेटर नहीं लगाया गया।ब्लड नहीं चढ़ाया गया था।४-५ घंटे बाद कमरे में शिफ़्ट कर दिया था। श्रीराधा रमणकी कृपासे दर्द भी नहीं है।

इस सबमें मैंने कुछ भी नहीं किया। पूज्य गुरुदेवकी कृपा के बिना कुछ भी सम्भव नहीं था।

<u>रक्षाके लिए नारायण कवच का पाठ ही क्यों हुआ।</u>

कुछ दिन पहले ३ ऑगस्त श्रीलनवयोगेंद्र स्वामी जी महाराजके ग्रूप में एक संदेश आया था, जिसमें लिखा था-

श्रीला प्रभुपाद जी और श्री श्री गौर राधाकृष्ण भगवान् जीकी कृपासे, महाराजजी कुशल पूर्वक है। हमारी यही कामना है कि महाराजजी हमेशा स्वस्थ रहें और श्रीला प्रभुपादजीकी प्रसन्नताके लिए अपना प्रचार कार्य इसी प्रकार करते रहें।

महाराज जीके उत्तम स्वास्थ्यके लिए हम श्रीभगवानकी नित्य प्राथना प्रारंभ कर रहे है। इसमें भक्तों द्वारा बहुत सारी क्रियाएंकी जा सकतीं हैं। नारायण कवच भी उनमेंसे एक क्रिया था। उसी दिनसे मैं भी परम पूज्य श्रीलनवयोगेंद्र स्वामीजी महाराजके लिए एक बार नारायण कवच का पाठ करने लगी।

जब मेरे साथ यह घटना हुई तो मैंने यही सोचा मेरे दादा गुरुदेव त्रिकाल दर्शी हैं, उनके शुभ आशीर्वादसे मेरे लिए भी नारायण कवचका पाठ हुया है।

मेरे लिए उससे भी चौंका देने वाली घटना यह है कि जब मैंने मध्य रात्रि में नारायण कवचके पाठके बारेमें अपने पूज्य गुरुदेव श्रीहरिनाम दास चंद्रसागरजीको बताया तो उन्होंने इस पाठका राज बताया ।

११ ऑगस्त रात्रिमें काल करके उन्होंने मुझे शुभ आशीर्वाद दिया था। तब श्रीचरणके सामने बैठ कर उन्होंने नारायणसे कहा था " हे गोबिंद अगर यह मुझे २-३ दिन का समय देती तो मैं नारायण कवच बना के भेज देता" फिर उन्होंने नारायण कवच के कुछ श्लोकों का उच्चारण किया।

समय कम इसलिए था क्योंकि मैंने उन्हें १० तारीख़ को बताया था।

दोनो घटनाको जोड़ो तो जब मैंने रात्रिमें नारायण कवचका पाठ सुना था तो शुरूके श्लोक नहीं सुनाई दिए थे।

पूज्य गुरुदेवने मेरी रक्षा के लिए जो श्लोक बोले थे उनके आगे नारायण कवचका पाठ नारायणने स्वयं अपने प्यारे लाडले भक्त पूज्य गुरुदेवकी इच्छाकी पूरी करनेके लिए किया।

अब जो मैंने :

कथा कहानियोंमें खूब सुना था कि सद्गुरू भगवानके हाथमें मनुष्यका हाथ दे देते हैं। मेरा हाथ भी सद्गुरुदेवने गोबिंदके हाथमें दिया।

खूब सुना था संत चाहें तो ईश्वर तुरंत कृपा करते हैं। पूज्य गुरुदेवकी इच्छासे ही यह कृपा हुई।

खूब सुना था जब आर्त भावसे पुकारो तो प्रभु भागे चले आते हैं। ऑपरेशनसे पहले आर्त भाव से पुकारनेका प्रयास किया था क्योंकि मैं डरी हुई थी। अंतिम आस केवल गोविंद ही थे।

यह भी सुना था जीवनमें दुःख केवल आपको सजा देनेके लिए नहीं आते परमात्मासे मिलानेके लिए भी आते हैं। यह कष्ट मेरे जीवनमें सजा नहीं कृपा के लिए ही आया है।

यह तो पूज्य गुरुदेवने बार बार बताया थाकि भगवानका केवल नाम सब दुःख दूर कर सकता है।नाममें अपार शक्ति है। मैंने नाम जप किया था ऑफ़िस एवं घरका काम करते करते। पूरा ध्यान नहीं था तब भी नाम की शक्तिका साक्षात्कार हुआ।

यह भी सुना था ठाकुरका नामलेनेसे प्रारब्ध भोगना भी पड़े तो ठाकुर संग मुश्किल समय कटवाते हैं।यह वाक़य भी सत्य हुआ। ठाकुर स्वयं आए थे।

इस बार द्रौपदी या उत्तरा नहीं थी पूज्य गुरुदेवकी कृपा से मुझ पापीके लिए भी आए थे।

यह तभी सम्भव हुआ जब पूज्यश्रीसदगुरुने मेरे माथे पर अपना आशीर्वाद भरा हाथ रखा तब ही मैंने नाम जपना शुरू किया।मेरे जन्म-जन्मांतरोंके किल्विष दुःख दूर हो गए हैं, क्योंकि पूज्यश्रीसदगुरुने मुझे परमात्माका नाम प्रदान किया है और मेरा प्रारब्ध कट गया है॥

इतना ही नहीं पूज्य सद्गुरूदेव ने, परम भक्तोंने मेरे लिए नाम धन जो न्योछावर किया उसके लिए मैं आजीवन ऋणी रहूँगी। धन्यवाद शब्द बहुत छोटा है।पूज्य गुरुदेव इस जीवनमें हमेशा आपका मार्गदर्शन मिलता रहे। आपकीकृपा, स्नेह और समर्थन शुभ आशीर्वादके लिए सदा आभारी हूं।

परिणीता राधारमण।